अजायब बानी

मासिक पत्रिका मार्च-2022

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

अजायब बानी

वर्ष–उन्नीसवां | अंक–ग्यारहवां | मार्च–2022

3 भजन–अभ्यास
5 मौत से डरें
23 अमृत वचन
25 सवाल–जवाब

प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)
संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01
विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04
उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **डॉ सुखराम सिंह**

e-mail : dhanajaibs@gmail.com 240 Website : www.ajaibbani.org
RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

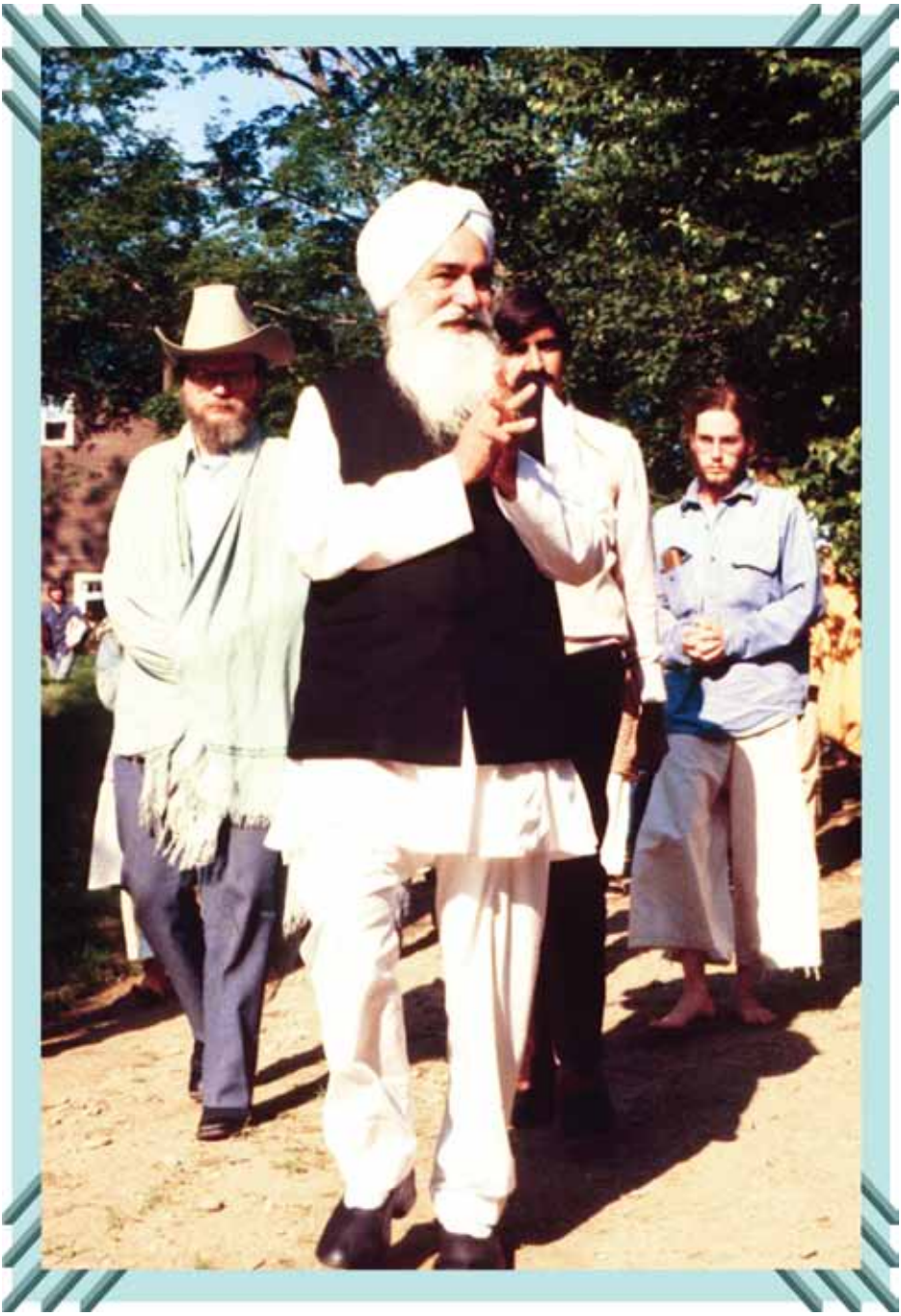

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों को भजन में बिठाने से पहले

भजन-अभ्यास

सितम्बर 1995 अहमदाबाद

परमपिता परमात्मा सावन-कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने गरीब आत्मा पर दया की, रहम किया, तपती हुई आत्मा को नाम के छींटे देकर ठंडा किया। कोई टीचर यह नहीं चाहता कि मेरा बच्चा कमजोर हो। टीचर के दिल में यही ख्वाहिश होती है कि मेरी क्लास स्कूल में अव्वल नम्बर पर आए। इसी तरह सन्त-सतगुरु की दिली ख्वाहिश होती है कि मेरे प्यारे बच्चे सबसे अच्छे, बेहतर और निर्मल हों। ये बच्चे विषय-विकारों में लिप्त न हों और मेरे रहते हुए ही शब्द की धार पर सवार होकर अपनी क्लास में पास हो जाएं।

सन्त-महात्माओं का सदा ही यह होका रहा है आओ चलो, सच्चाई को खुद देखो। हम भूले हुए जीव दुनिया के रसों-कसों में जकड़े हुए हैं। जब हम उनके साथ चलने के लिए तैयार नहीं होते तो वे हमें दुनियावी मिसालें देनी शुरु करते हैं ताकि हमें समझ आ जाए। जिनकी आत्मा नाम के साथ जुड़ जाती है, नाम को प्रकट करके नाम रूप हो जाती है, उनका कायाकल्प हो जाता है, उनके ऊपर इंसानी कमजोरियों का कोई असर नहीं होता।

ऐसी महान आत्मा का जीवन संसार में इस तरह होता है जिस तरह जल कुकड़ी जल में रहती है, खाती-पीती है लेकिन जब उड़ती है तो खुष्क परों के साथ उड़ जाती है। महात्मा हमें बताते हैं कि जब एक बार दूध से दही बन जाता है फिर वह दही, दूध नहीं बन सकता। जब पारस के साथ लगकर लोहा, सोना बन जाए फिर चाहे आप जो मर्जी यत्न कर लें वह लोहा नहीं बन सकता। जब लकड़ी, अग्नि का रूप धारण करके राख बन जाती है उसके बाद वह दोबारा लकड़ी नहीं बनती।

इसी तरह जब हम नौं द्वारे खाली करके 'शब्द' को अपने अंदर प्रकट कर लेते हैं तो हमारे अंदर किसी इंसानी कमजोरी का असर नहीं होता। जिस तरह नटनी अपनी कला का प्रदर्शन करती है, वह बड़ी होशियारी से रस्सी के ऊपर नाच करती है। राजा–महाराजा, बड़े–बड़े आदमी उसको देख रहे होते हैं लेकिन उसकी तवज्जो किसी की तरफ नहीं अपनी कला की तरफ होती है। वह ढोलक की ताल पर अपना प्रर्दशन कर रही होती है इसी तरह जब हमारी आत्मा एकाग्र होकर अंदर 'शब्द' के साथ जुड़ जाती है तो यह शब्द की ताल पर उसी तरह नाच करती है फिर हमारी आत्मा की भी दुनिया में किसी तरफ तवज्जो नहीं होती।

जिस तरह मटकी में खीलें होती हैं, बंदर उसमें हाथ डाल लेता है लेकिन मुट्ठी को ढीला नहीं करता चीखें मारता है इसी तरह हमने भी उस बंदर की तरह विषय–विकारों को कसकर पकड़ा हुआ है। सन्त कहते हैं कि आप मुट्ठी को ढीला करके सदा के लिए इनसे मुक्ति प्राप्त कर लें। हम उस बंदर की तरह रोते–चिल्लाते बहुत हैं, बहुत दुखी हैं लेकिन अपने ख्याल को इस तरफ से मोड़ते नहीं, शब्द के साथ जुड़ते नहीं।

हमें भी चाहिए कि हम 'शब्द–नाम' की कमाई करके शब्द रूप हो जाएं। हमारे सतगुरुओं ने हमारे ऊपर दया करके हमें जो भक्ति का मौका दिया है, हम इससे पूरा–पूरा फायदा उठाएं।

हाँ भई, आँखें बंद करके अपना अभ्यास शुरु करें।

***

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

मौत से डरें

02 अक्टूबर 1993 | DVD - 247 | स्वामी जी महाराज की बानी | 16 पी.एस.आश्रम (राजस्थान)

फिरत फिरत प्रभ आया परया तू शरणाई
नानक की प्रभ बेनती अपनी भक्ति लाई

कुलमालिक परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में करोड़ो बार नमस्कार है। गुरुमुखों को ही गुरु की असली कद्र होती है कि गुरु क्या ताकत है, गुरु आत्मा के ऊपर कितना परोपकार करता है और वह कितना दयालु है, हम गुरु का सच्चा धन्यवाद उस वक्त ही कर सकते हैं जब हम अपने फैले हुए ख्याल को सिमरन के जरिए आँखों के पीछे लाकर एकाग्र कर लेते हैं। जहाँ हमारे मन और आत्मा की सीट है वहाँ सच्चखंड से उठकर परमात्मा की आवाज धुनकारे दे रही है, वही सच्चा नाम है। यह नाम न पढ़ने–लिखने में आता है और न बोलने में आता है।

जब हमारी आत्मा सिमरन के जरिए अपने ऊपर से स्थूल, सूक्ष्म और कारण के तीनों पर्दे उतार लेती है, सूरज–चन्द्रमा, सितारे पार करके गुरु स्वरूप तक पहुँचती है वहाँ पहुँचकर आत्मा असली शिष्य बन जाती है, शब्द रूप गुरु इसका गुरु बनता है। हमें उस वक्त पता लगता है कि हमारा गुरु कितना महान है और हमारी आत्मा भी कितनी महान है लेकिन हमारी आत्मा अपने घर को भूल गई, आत्मा मन–माया का साथ लेकर मैली हो गई, इसने सतपुरुष की याद को बिल्कुल भुला दिया।

सन्त–महात्मा संसार में कोई नया मिशन लेकर नहीं आते और न ही कोई समाज चलाने के लिए आते हैं। महात्माओं का संसार में आने का उद्देश्य उन आत्माओं को नाम देना है जिन्हें परमात्मा ने अपने चुनाव में ले लिया है कि अब इनका संसार में चक्कर लगाना समाप्त हो गया

है। महात्माओं को जिम्मेवारी सौंपी गई है कि इन आत्माओं को मेरे साथ जोड़ना है। महात्मा किसी आत्मा को अपनी देह के साथ नहीं जोड़ते वे आत्मा को 'शब्द–नाम' के साथ जोड़ते हैं। वही महात्मा 'शब्द–नाम' के साथ जोड़ता है जो खुद परमात्मा के साथ जुड़ा हुआ है। पहलवान ही पहलवानी सिखा सकता है और पढ़ा हुआ ही पढ़ा सकता है।

जब मौत याद आती है उस वक्त ही पता लगता है कि हमने दुनिया में इतना वक्त खराब कर दिया है, हमने यह भरा हुआ बाजार छोड़कर चले जाना है। हम रेडियो सुनते हैं, अखबार पढ़ते है कि एक मुल्क दूसरे मुल्क के साथ लड़ाई कर रहा है जबकि सारे ही मुल्क शान्ति और एकता का उपदेश देते हैं। आज के युग में बड़े–बड़े भूकम्प और कुदरत के प्रकोप भी नजर आते हैं जो दिल को हिला देने वाले हैं।

महाराष्ट्र के कुछ हिस्से में भूकम्प आया जो दिल को हिला देने वाला वाक्या है। जब भूकम्प आया उस इलाके, शहर, गाँव के लोग रात को बातें करते, हँसते–खेलते, खाना खाते, टेलीविजन देखते हुए अपने परिवार के साथ सोए होंगे तो क्या उन लोगों को मौत याद थी? क्या किसी को मालूम था कि सोते हुए ही हमारा विनाश हो जाएगा और हम एक–दूसरे से नहीं मिलेंगे। हर एक ने अलग–अलग टाईम पर जन्म लिया लेकिन मौत का एक ही वक्त मुकर्रर था।

आर्मी में मुझे ऐसे मौकों पर राहत कार्य पहुँचाने का समय मिलता रहा है। जिसने ये नजारे देखे होते हैं कि दुनिया की क्या दुर्दशा होती है उसका दिल काँप जाता है। सन्तों का दिल हर आत्मा के लिए नरम होता है क्योंकि आत्मा प्रभु की अंश है, आत्मा चाहे संसार के किसी भी कोने में रहती है, सन्तों के दिल में उसके लिए दर्द होता है।

सन् 1947 में जब हिन्दुस्तान पाकिस्तान का बँटवारा हुआ, उस समय हमारी आर्मी की ड्यूटी गाँवों में लगी थी कि कोई किसी को न मारे। जब

ऐसी विनाशकारी लीला होती है तो वहाँ काल के दूत भी पहुँच जाते हैं जिन्हें हम लुटेरे कह देते हैं और उनकी मदद करने वाले भी पहुँच जाते हैं लेकिन ज्यादा तहलका लूट–पाट करने वालों का ही होता है। उस समय सरकार की इजाजत नहीं थी कि आप जनता के साथ इस तरह मुँह काला करें। वह नजारा भूलने वाला नहीं था। ऐसे मौको पर देखने को मिलता है कि माता मरी हुई है, चार–पाँच महीने का बच्चा माता के स्तन पर चिपटा हुआ है। उस बच्चे को यह नहीं पता होता कि मेरी माता मर चुकी है, उसे सिर्फ अपनी ही थूक का रस आता है, ऐसा समय बड़ा दर्दनाक होता है।

सन्त–महात्मा सदा ही कहते हैं, ''प्यारे बच्चो, आप जो यह संसार देख रहे हैं यह परिवर्तन शील है, यहाँ सदा कोई स्थिर नहीं।''

जो आया सो चलसी सब कोई अपनी वार

जो आया है उसने जाना है। दुनिया की यह हालत है कि यह सदा बदलती रहती है। यहाँ हर धातु–सोना, लोहा और सब बदलता रहता है, यहाँ कोई भी चीज़ स्थिर नहीं। हमें पता नहीं कि मौत ने किस वक्त किस जगह किस बहाने गला दबा लेना है, हमारी प्लेनिंग बीच में ही धरी–धराई रह जाती है। स्वामी की महाराज कहते हैंः

मौत से डरत रहो दिन रात

मौत से डरें यह किसी का लिहाज नहीं करती, मौत किसी को नहीं बख्शती। पता नहीं कि मौत ने बच्चे को आना है या बूढ़े को आना है। मौत ने किसी से वारंट नहीं कटवाना। यह अंदर ही जान को कब्जे में कर लेती है। बाहर जो घटना घटती है वह तो एक बहाना ही है। जिस इलाके में भूकम्प आया है, वहाँ के जमींदारों ने फसलें बीजी हैं वह फसलें तो लहलहाती खड़ी होंगी लेकिन उन फसलों को क्या ज्ञान है कि हमारा मालिक हमें काटेगा या नहीं? गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

बीज मंत्र सर्व को ज्ञान

इसी तरह जिनके छोटे–छोटे बच्चे होते हैं उनके माता–पिता को ज्ञान नहीं होता कि हमने इन बच्चों को बड़े होते हुए देखना है या नहीं? हमनें इनकी शादी करनी है या नहीं? या इस बच्चे ने संसार छोड़ जाना है।

स्वामी जी महाराज हमें प्यार से कहते हैं कि आप **मौत से डरें** लेकिन हमें उस समय डर लगता है जब हम 'शब्द–नाम' के साथ जुड़ते हैं। अपने ख्याल को दुनिया में से निकालकर उस आवाज के साथ जुड़ते है जो सच्चखंड से उठ रही है, उससे पहले जुबानी जमा खर्च है। कभी दिल को ठोकर लगी दुनिया की तरफ से दुःखी हुए तो हम कह देते हैं, ''इससे तो मर जाना ही अच्छा है।'' महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि ये बातें भी हम बाहर ही करते हैं अंदर जाने के लिए कोई तैयार नहीं होता।

महाराज सावन सिंह जी यह कहानी सुनाया करते थे, जो मैं कई बार सतसंग में सुनाया करता हूँ कि एक लड़की बीमार थी उसकी माता रोज ही कहती कि मैंने बहुत कुछ खा–पी लिया है, यह लड़की अभी जवान है तू मुझे ले जा। एक दिन ऐसा हुआ कि बाहर से कोई बैल घर के अंदर दाखिल हो गया बैल ने इधर–उधर देखा उसे खाने के लिए कुछ नहीं मिला। खाली देग रखी हुई थी, बैल ने देग में मुँह डाला, देग का आगे का हिस्सा काला था बैल का मुँह ढक गया। सिर से पहचान होती है कि यह बन्दा है, कोई फरिश्ता है या पशु है।

वह माता रोज मौत के देवता को याद करती थी कि मैंने बहुत खा–पी लिया है तू मुझे ले जा। जब वह बैल घबराकर इधर–उधर दौड़ा तो माता ने सोचा कि मौत का देवता आ गया है। माता ने जल्दी से कहा, ''मैं तो बूढ़ी हूँ, मरने वाली तो वहाँ पड़ी है।'' हमारी यह हालत है हम कह जरूर लेते हैं लेकिन हम जाने के लिए तैयार नहीं होते। गुरु साहब कहते हैंः

मरन न मुहूर्त पुछ्या पुछे तिथि न वार, इकनी लद्दे इक लद्द गए ते इक न बद्दे भार
लश्कर सणें दोआम्या छुट्टे बन्त गवार, नानक ढेरी शार की भीतर होई शार

यह शरीर मिट्टी है, मिट्टी बन जाता है। जिनके बड़े–बड़े लश्कर होते हैं, फौजें होती हैं वह पहरे पर ही खड़ी रह जाती हैं; उनके हथियार कसे–कसाए रह जाते हैं। कबीर साहब कहते हैंः

हां को पर्वत फाड़ते समुंद्र घुट भराए, ते मुनवर मर गले

जिनकी जुबान में इतनी शक्ति थी कि आवाज से पहाड़ भी फटते थे, वे जो कह देते थे वही होता था। वे इतना दावा करते थे कि हम समुंद्र को भी पी सकते हैं लेकिन आज वे कहाँ हैं? अब उनकी मिट्टी यहाँ रूल रही है, हमारी भी ऐसी ही हालत होगी।

हम लोगों को मरते हुए देखते हैं, लोगों ने हमें मरते हुए देखना है। हम अपने बहन–भाई, यार–दोस्तों को कंधा देकर छोड़कर आते हैं, वे हमें छोड़ आएंगे। हमें यह भी पता नहीं कि किसी ने कंधा देना है या नहीं? **मौत से डरें**, पता नहीं मौत ने किस जगह, किस तरीके से आना है। आम अखबारों में पढ़ते हैं कई बार ऐसे भी हादसे हो जाते हैं कि उनका शरीर भी नहीं बचता, उनके कपड़ो से पहचान आती है; उनको क्या कंधा लगाएंगे इसलिए सन्त–महात्मा कहते हैं कि आप बैठकर अपना भी कुछ करें, अपने बारे में भी सोचें। कबीर साहब बहुत प्यार से समझाते हैंः

कह संगत कर साध की कह हरि के गुण गाए

तेरा शरीर जा रहा है तू इसे किसी तरफ लगा, किसी महात्मा की संगत कर। संगत करेंगे तो महात्मा हमें नाम जपने के लिए कहेंगे। महात्मा हमें किसी के साथ नहीं लड़वाते, किसी खास किस्म के कपड़े पहनने के लिए नहीं कहते। फिर आप कहते हैंः

गोर निमाड़ी सड करे निगरया घर आओ
सर पर मैथो चलणा मरनो क्यों डराओ

कब्र आवाजें मारती है कि तू मुझसे दूर भागता है आखिर तूने मुझमें ही समाना है तू क्यों डरता है? फरीद साहब कहते हैंः

मैं भुलावां पग दा मत मैली हो जाय
गहला रूह न जांड़ी सिर पी मिट्टी खाय

इसे क्या पता है कि सिर भी मिट्टी में रूल जाएगा। सन्त–महात्मा आकर हम सोते हुओ को जगाते हैं कि प्यारेयो, गफलत की नींद से जागें। आपको जो वक्त मिला है उससे पूरा फायदा उठाएं, फायदा यह उठाना है कि इस शरीर में बैठकर भजन–सिमरन करना है।

मौत से डरत रहो दिन रात। मौत से डरत रहो दिन रात।।
एक दिन भारी भीड़ पड़ेगी। जम खूंदेंगे धर धर लात।।

हर एक पर एक दिन ऐसा वक्त आता है कि यम आते हैं और कान से पकड़कर ले जाते हैं। सारी जिंदगी जो ऐब–पाप, खुनामियाँ की हैं उन्हें भोगना पड़ता है, उनका हिसाब देना पड़ता है। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''काल किसी का एक रत्ती का हिसाब भी माफ नहीं करता अगर सतसंगी होकर कोई ऐब–पाप करता है तो काल उसके गुरु को दिखाता है कि देख, तूने इसे नाम दिया है, क्या यह नाम के काबिल है, यह किस तरह जनाहकारी करता है? बाँई तरफ काल बैठा है और दाँई तरफ नाम देते समय गुरु बैठ जाता है।'' हम तो यह कहते हैं कि हमें कौन देख रहा है? देखने वाला आपके अंदर है। कबीर साहब कहते हैंः

माड़ा कुत्ता खसमे गाली

पहले तो बाहर हमें दुनिया कहती है कि यह सन्तों के पास जाता है फिर भी ऐब करता है। बहुत से लोग आकर बताते हैं कि लोग हमें इस तरह कहते हैं। मैं उनसे कहता हूँ, ''वे आपका फायदा करते हैं आप उनके शुक्रगुजार होऐं और उस ऐब को छोड़ें।''

अंदर काल, शब्द–रूप गुरु से कहता है कि तूने इसे नाम दिया है? लेकिन परमात्मा ने सन्तों को बहुत सब्र देकर भेजा होता है। महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सन्त हाथ से डोरी नहीं छोड़ते, ढीली जरूर कर

देते हैं, जब खींचते हैं तब जीव को पता लगता है।'' ऐसा न सोचें कि सन्त नाम देते हुए कोई गलती करते हैं, उनका चुनाव सही होता है।

जिस तरह आसमान में हर बादल में इन्द्रधनुष नहीं बनता, कभी–कभी किसी–किसी बादल में ही बनता है। इसी तरह सतसंगी के अंदर भी खास किस्म के रंग उतरते हैं वे रंग सिर्फ कमाई वाले महात्मा को ही नजर आते हैं क्या यह अब तैयार है, क्या इसमें मालिक की निशानी आ गई है? महात्मा का चुनाव ठीक होता है।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे कि कर्मों का हिसाब शिष्य चुकाए या गुरु चुकाए। जीव तो पिछले किए हुए कर्म ही नहीं भोग सकता, यहाँ वाले कर्म कैसे भोगेगा? आपको पता ही है कि जरा सा काँटा चुभ जाए तो सारी रात तड़पते हैं और गुरु के आगे पुकार करते हैं कि अब बख्श लें। आप कहते हैंः

जो जो कर्म करे सो भोगना भरना

हम जो कर्म करते हैं वे हमने ही भोगने हैं और किसी ने नहीं भोगने। आप जो बोऐंगे वह आपको काटना पड़ेगा। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

खेत शरीर जो बीजया सो अंत खलोया आए

जो आपने बोया है वह आपको ही काटने के लिए आना है। मिर्च बोएंगे तो मिर्च काटने के लिए आ जाएंगे अगर कोई मीठा पदार्थ ईख वगैरह बोएंगे तो ईख काटने के लिए आ जाएंगे।

वा दिन की तुम याद बिसारी। अब भोगन में रहो भुलात।।

दुनिया ऐशो–इशरत, भोग, शराब–कबाब की लज्जतों में मस्त हैं लेकिन वह दिन कभी नहीं टलेगा। संसार में किसी भी जगह अमेरिका, कनाडा, कोलम्बिया के देशों में चले जाएं या हिन्दुस्तान में रहने लग जाएं वह दिन कभी नहीं टलेगा। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

राम गयो रावण गयो जाँको बहो परिवार
कहो नानक थिर कछु नहीं सुपने ज्यों संसार

रावण के पास बहुत धन–पदार्थ था, सोने की लंका थी उसका परिवार बहुत बड़ा था, वह नहीं रहा। यह संसार एक स्वपन की तरह है। रात को सोते हैं स्वपन घंटे दो घंटे का है। यह स्वपन किसी को पाँच, दस, बीस या सौ सवा सौ साल का है, आखिर स्वपन ही है।

सुपने सेती चित्त मूर्ख लाया, आरजा गई विहाए धंधा धाया, पूर्ण भए नाकाम मोह या माया

हम मूर्ख मुग्ध गँवार है, हमने स्वपन से प्यार लगाया हुआ है। माया के वस होकर मोह की मीठी नींद में सोए हुए हैं। नामदेव जी कहते हैंः

मेरी मेरी कौरव करते दुर्योंधन से भाई
बारह योजन छत्र झुला था देही गिरज न खाई
सरब सोने की लंका होती रावण से अधिकाई
कहाँ भयो दर बाँधे हाथी खिन्न में भई पराई
दुर्वासा स्यों करत ठगोरी यादव ऐह फल पाए
कृपा करी जन अपने ऊपर नाम लेयो हर गुण गाए

कौरवों को अहंकार था कि हम हिन्दुस्तान के राजा हैं, हमारे ज्यादा भाई हैं लेकिन मालिक जिस पर कृपा करता है वही भक्ति में लगता है, वही भजन में बैठता है।

एक दिन काठी बने तुम्हारी। चार कहरवा लादे जात।।
भाई बंन्धु कुटुम्ब परिवारा। सो सब पीछे भागे जात।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''एक दिन काठ की घोड़ी जरूर मिल जाएगी। भाई–बंधु, कुटुम्ब–परिवार सब अपने धंधों के लिए रोते हैं कि अब ये चला गया है। वे अपने मतलब को याद करते हैं लेकिन कोई उसका दुःख–दर्द नहीं बाँट सकता, उसे रख नहीं सकता। किसमें ऐसी हिम्मत है जो उस जाते हुए को रख ले? वह हमारा रोना भी नहीं सुनता, रोना भी हम लोगों को सुनाते हैं।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

धंधा पिट्टो भाईयो तुम कूड़ कमावो
ओ न सुनही कतही तुम लोक सुनावो

आप फिर कहते हैं अगर बालक मर जाए तो लोग क्या करते हैं?

बालक मरे बालक की लीला कह कह रोवे बाल रंगीला
जिसकी चीज़ सोई ले जाए भूला रोवण हारा हे

अगर बच्चा मर जाए जिसे चार या दस दिन ही देखा होता है उसके नक्श याद कर–करके रोते हैं। आप उसे कहाँ से लाए थे? आपका अपना शरीर माँस का लोथड़ा था, क्या अपने साथ कोई सामान लाए थे, कोई बच्चे–बच्चियाँ या जायदाद साथ लाए थे? परमात्मा ने हमारे ऊपर दया करके हमें ये सब कुछ यहाँ पर दिया। यह तो एक बच्चा था अगर जवान मर जाए तो गुरु नानकदेव जी कहते हैः

माया कारण पिड़ बन रोवे

माया की खातिर उसकी बातें याद करते हैं कि वह इतना कमाता था उसके होते हुए हमें बिल्कुल फिक्र नहीं था। अफसोस! उसकी आत्मा के लिए कौन सोचता है? सन्त कहते हैं कि भजन करें ताकि उसकी आत्मा का उद्धार हो। जिनकी खातिर हम सारी जिंदगी कीमती उसूल कुर्बान करते हैं वे हमारे जाने के बाद दो मिनट भी भजन पर नहीं बैठते। बाद में भी सिर्फ अपने धंधों के लिए रोते–बिलखते हैं।

आगे मरघट जाय उतारा। तिरिया रोए बिखरे लाट।।
वहाँ जमपुर में नर्क निवासा। यहाँ अग्नि में फूँके जात।।

अब स्वामी जी महाराज प्यार से कहते हैं, ''हम हमेशा ही अपने रस्मों–रिवाज देखते हैं फिर भी हमारे कान पर जूँ नहीं रेंगती। हम कहते हैं कि मौत लोगों के लिए है हमारे लिए तो शराब–कबाब ही हैं हाँलाकि सब कुछ आँखों से देखते हैं फिर भी सिर फेर देते हैं।''

जब हम कश्मीर की लड़ाई जीतकर अमृतसर आए, अमृतसर की कमेटी ने हमारा स्वागत किया। अमृतसर की जनता ने स्टेशन पर चाय का इंतजाम किया। उस समय रियासतें होती थी, जब हम पटियाला आए तो पटियाला के राजा ने पंजाब के मशहूर नकलिए बुलाए हुए थे। नकलिओं ने हमारे फर्स्ट पटियाला की नकल उतारी।

हमारा सिविल सर्जन जगजीत सिंह काफी काबिल डॉक्टर था। उसने ऐसे बहुत से मरीज ठीक किए थे जिनके पेट गन की गोलियाँ लग–लगकर छलनी हो चुके थे सिर्फ आँतड़ियाँ ही साबुत रह गई थी। नकलियों ने तो मनोरंजन ही करना था। वहाँ एक नकलिया, डॉक्टर जगजीत सिंह बन गया। उसके पास फर्स्ट पटियाला का एक सिपाही भी आ गया। डॉक्टर ने कहा कि तेरे दिमाग का ऑपरेशन होगा, डॉक्टर ने दिमाग का ऑपरेशन कर दिया लेकिन वह दिमाग डालना भूल गया।

कुछ दिनों बाद उस डॉक्टर को याद आया कि फलाने नम्बर का सिपाही कैसे काम करता है मैं तो उसका दिमाग डालना ही भूल गया था। डॉक्टर ने उस सिपाही को फोन किया कि प्यारेया, आकर अपना दिमाग डलवा जा। जवाब में सिपाही ने कहा कि मैं फर्स्ट पटियाला में भर्ती हूँ, मुझे दिमाग की कोई जरूरत नहीं। उन नकलिओ ने सबको हँसाया।

कहने का मतलब यह था कि फर्स्ट पटियाला ऐसे मुहूर्त में बनी थी कि उसने कभी भी हार का मुँह नहीं देखा, वह जहाँ गई करण–कारण परमात्मा ने उसे जीत दी। हिन्दुस्तान में भी कश्मीर में पहली जीत फर्स्ट पटियाला की हुई थी। मेरे कहने का भाव जो बंदा लड़ता है वह सोचता नहीं, वह दो ही बातें जानता है मरना है या मार देना है।

आप सोचें! कौन सी चीज़ आपके फायदे में है, किस चीज़ ने आपके साथ जाना है? जिस शरीर ने जन्म लिया है यह भी साथ नहीं जाएगा। हम भी दिमाग अपने पास नहीं रखते, यहाँ सुना और यहीं छोड़ गए।

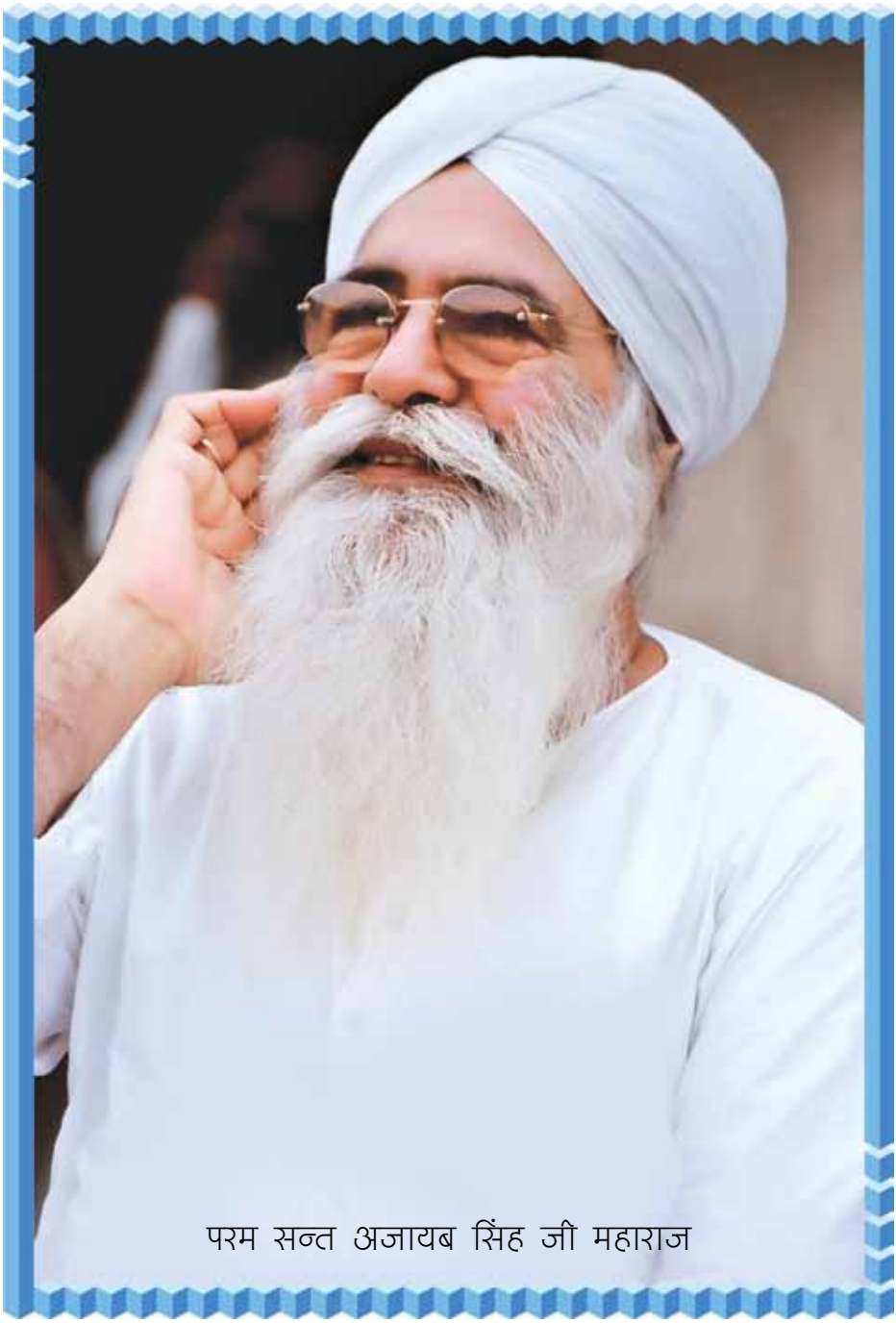

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

महाराज सावन सिंह जी सतसंग में अक्सर यह कहानी सुनाया करते थे कि एक बनिया था, वह जिंदगी में काफी समय सतसंग में जाता रहा। एक दिन उस बनिए को कोई खास काम पड़ गया तो उसने अपने बेटे को सतसंग में जाने के लिए कहा। बनिए का बेटा सतसंग में चला गया। सतसंग में महात्मा कह रहे थे कि सब पर दया करो, सबके अंदर आत्मा है। कबीर साहब कहते हैंः

धन दिए धन न घटता नदी न घटती नीर
अपणी आँखों देख ले जो कथ रहे कबीर

लड़के के दिमाग में महात्मा की बातें बैठ गई। वह लड़का सतसंग से वापिस आया तो उसने देखा कि दुकान पर गाय आटा खा रही थी। लड़के के दिल में ख्याल आया कि हमें दुकानों का बहुत किराया आता है, हम बहुत ब्याज भी ले रहे हैं, हमारे पास भगवान का दिया हुआ सब कुछ है अगर यह गरीब गाय थोड़ा सा मुँह मार लेगी तो क्या फर्क पड़ता है ?

इतने में बनिया आ गया, वह गाय को आटा खाते हुए देखकर सहन नहीं कर सका। सब बूढ़ो की ऐसी हालत देखते हैं कहाँ सहन होता है? बनिये ने लड़के से कहा, ''अंधे के अंधे तू देख नहीं रहा कि गाय आटा खा रही है।'' लड़के ने कहा, ''पिताजी, परमात्मा ने हमें बहुत कुछ दिया है क्या हमारे पास कोई कमी है अगर यह गरीब गाय थोड़ा सा आटा खा लेगी तो हमें क्या फर्क पड़ जाएगा?'' बनिए ने पूछा, ''तू ये सब कहाँ से सीखकर आया है?'' लड़के ने कहा, ''आपने सतसंग में भेजा था वहाँ महात्मा कह रहे थे कि गाय, गरीब पर दया करें।'' बनिए ने कहा, ''मुझे सतसंग में जाते हुए तीस साल हो गए हैं अगर मैं ऐसी बातें मानता तो अब तक सारा घर ही उजाड़ चुका होता।''

हमारी भी यही हालत है हम सतसंग में प्यार से आते हैं अगर प्यार और तड़प न हो तो हम सतसंग में आ ही नहीं सकते लेकिन यहाँ आकर हमारा मन हमें भुला देता है। जब हमें वक्त पर खाना मिल जाता है,

सतसंग मिल जाता है तो क्यों न भजन करें लेकिन हम टोलियाँ बनाकर इसकी या उसकी निन्दा करते हैं। निन्दा करके हम घर वापिस आ जाते हैं और यहाँ सतसंग में एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हैं।

वहाँ जमपुर में नर्क निवासा। यहाँ अग्नि में फूँके जात।।

अब स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''यहाँ देह अग्नि में फूँकी जाती है और वहाँ काल आत्मा को नर्क में डाल देता है। जैसे कर्म किए वैसा भोगने के लिए आ जाता है। रिद्धि–सिद्धि वाले योगी भी इससे बच नहीं सके।''

मैं एक सन्त का वाक्या बताया करता हूँ वह देह पलट लेता था। मैंने उसकी सेवा की, वह मुझ पर दयावान हुआ। उसने कहा, ''देख बेटा, मैं तुझे यह सिखा सकता हूँ।'' मैंने उस सन्त से कहा, ''बाबा जी, मैं आपका बहुत धन्यवादी हूँ लेकिन मेरी तलाश तो इंसान के जामें से ऊपर जाने की है अगर मैं बुरे कर्म करूँगा तो अपने आप ही ये सब बन जाऊँगा।''

एक बार वह बाबा देह पलटकर दूर किसी जगह चला गया। बेशक वह अपने बड़े चेले को बताकर गया था कि मुझे वापिस आने में टाइम लगेगा। उस गाँव के लोगों ने कहा कि बाबा गुजर गया है। उस चेले ने बहुत कहा कि वह वापिस आ जाएगा लेकिन गाँव के लोगों ने उस बाबा का शरीर फूँक दिया। जब उसका शरीर फूँक दिया तो बाबा रोज उस चेले को तंग करने लगा कि तूने इन लोगों को मना क्यों नहीं किया। यम मुझे आगे लेकर नहीं जा रहे और यहाँ मेरा शरीर भी नहीं छोड़ा। यह मेरे जीवन की खास घटना है। नाम के बिना मुक्ति नहीं, कहीं यह ख्याल हो कि हम जप–तप, रिद्धि–सिद्धि से मुक्ति प्राप्त कर लेंगे।

दोनों दीन बिगाड़े अपने। अब नहीं सुनता सतगुरु बात।।

दोनों दीन बिगाड़ लिए। परमात्मा ने इंसान का जामा अमोलक दात बक्शी थी वह गँवा दी आगे जाकर परमात्मा के घर में जगह नहीं मिली।

न सन्तों की बात पर अमल किया न दुनिया के मतलब के रहे। मुसलमान लोग कव्वाली गाते हैंः

कमली वाले का दर छोड़कर न इधर के रहे न उधर के रहे

वा दिन बहु पछतावा होगा। अब तुम करते अपनी घात।।

जब मौत आकर गला दबाती है उस समय अंदर पता लगता है कि बस! अब जाने वाला ही हूँ। तब यह पछताता है लेकिन उस समय क्या बनता है? स्वामी जी महाराज कहते हैंः

अपने जीव की दया पा लो चौरासी का फेर बचा लो

भजन–सिमरन करना किसी के ऊपर अहसान करना नहीं है, अपने आप पर दया करना है। अपने आप पर दया वही करेगा जिसे समझ आ गई कि मैंने एक दिन यहाँ से चले जाना है। पता नहीं मेरा वास्ता कैसे लोगो से पड़ेगा वे काले हैं या गोरे हैं। उनके हाथ में लट्ठ है, छुरा है या फूल है। वह रास्ता कितना लम्बा, टेढ़ा–मेढ़ा या काँटो वाला है। पता नहीं कैसी–कैसी धरती के ऊपर से गुजरना है।

आप गरूड़ पुराण पढ़कर देख लें, महात्माओं ने ये हमें डराने के लिए नहीं लिखे। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज का सुखमनी साहब पढ़कर देख लेंः

जिह पैडै महा अंध गुबारा, हरि का नामु संगि संग उजिआरा
जिह मारग के गने जाहि न कोसा, हरि का नामु ऊहा संगि तोसा

जवानी गई वृद्धता आई। अब कै दिन का इन का साथ।।

आप प्यार से कहते हैं, ''अगर बालपना नहीं रहा तो जवानी भी नहीं रहेगी, जवानी गई वृद्ध हो गया। बचपन, जवानी नहीं रही तो बुढ़ापा कब तक रहेगा? इसे भी छोड़कर चले जाना है।'' गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

यमराजा के हेरू आए माया संगल बंध लया

चाहे औरत है या मर्द है सबसे पहले कान के पास कुछ सफेद बाल आ जाते हैं। वे बाल कान के पास आकर कहते हैं अब समय है भजन कर ले। बालपना, जवानी खराब कर ली है और अब बुढ़ापा आ गया है। उस समय तृष्णा जाग जाती है, खुद तो भजन क्या करना था अगर घर में कोई भजन करता है तो उससे भी नाराज हो जाते हैं। आजकल तो बहुत सी दवाईयाँ चली हैं जब थोड़े से बाल सफेद हो जाते हैं तो हम उनको छिपाने के लिए रंग लगा लेते हैं। दुनिया से तो सफेद बाल छिपा लेते हैं लेकिन दूत आपके कान के पास आकर कहते हैं कि अब तो भजन कर ले।

मैं अपने पिता जी की बात बताया करता हूँ कि वह जपजी साहब पढ़ते हुए जानवरों को चारा खिलाते और नौकरों को गालियाँ भी देते। मैं कभी–कभी उनसे कहता, ''पिता जी, भगवान जपजी साहब सुनेगा या आपकी गालियाँ सुनेगा।'

चेत करो मानो यह कहना गुरु के चरन झुकाओ माथ।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं, ''जागें, गुरु के चरनों में जाकर अपना सिर रख दें कि हम भूल गए हैं। पीछे जो हो गया सो हो गया अब बक्श दें।'' महाराज सावन सिंह जी का वाक याद रखें, ''उसे भूला हुआ न जाने जो शाम को घर आ जाए।'' भाई गुरदास ने अपने गुरु के आगे यही कहाः

हौं अपराधी गुनाहगार हौं बेमुख मंदा

आप कहते हैं कि मैं अपराधी हूँ, बेमुख हूँ मंदा हूँ। वे अपराधी नहीं थे बेमुख नहीं थे। वे गुरु के मुख बने हुए थे, वे सच्ची–सुच्ची आत्मा थे। गुरु अर्जुनदेव जी अपनी बानी में लिखते हैंः

असी खट्टे बहुत कमांवदे कुछ अंत न पारावार
कृपा करके बख्श ले हूँ पापी बढ़ गुनाहगार

अभी गुरमेल ने शब्द बोला था, मैं कोट जन्म का अपराधी तेरे द्वारे आ गया हूँ, तू बख्श ले। माफी उसे ही मिलेगी जो माँफी माँगने के काबिल हो

जाए। महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''जो आदमी अपराध करके भी माफी नहीं माँगता उसे क्या कहेंगे?'' महाराज कृपाल कहा करते थे, ''सुराही तब झुकती है जब प्याला खाली हो अगर प्याला पहले ही पूरा भरा हुआ है तो सुराही क्या झुकेगी?'' हम पहले ही मैं–मेरी से भरे हुए हैं कि हमारी तरह कोई नहीं।

सन्त–महात्मा पवित्र आत्माएं होती हैं लेकिन वे हमें समझाने के लिए अपने आपको नीच शब्द बयान करते हैं कि इन भूले हुए जीवों को समझ आ जाए कि वह दरबार ही ऐसा है। आप कहते हैंः

मुक्ति द्वार संकड़ा राई दसवें भाए
मन तो हाथी हो रहया निकस्यों क्यों कर जाए

महात्मा हमें बताते हैं कि मैं और तूं उस मुल्क की भाषा नहीं। वह रास्ता राई से भी दसवां हिस्सा है। हमने मन को मैं–मेरी से हाथी बनाया हुआ है रोज–रोज भजन–सिमरन करके मन को बारीक करना है।

राधास्वामी कहत सुनाई। अब तुमको बहुतबिधि समझात।।

स्वामी जी महाराज कहते हैं कि सन्त–महात्मा हमें बहुत अच्छी–अच्छी दुनियावी मिसालें देकर समझाते हैं कि हमें आसानी से समझ आ जाएं। वह परमात्मा वाहेगुरु, अकाल–पुरख हम इंसानो के लिए इंसानी चोला धारण करके आता है। हम गाय–भैंसो की बोली नहीं समझ सकते, देवी–देवता हमने देखे नहीं। कुदरती तौर पर पशुओं का पशुओं से पक्षियों का पक्षियो से और इंसान का इंसान से प्यार होता है।

गुरु नानकदेव जी, कबीर साहब, मौलाना रूम, मौहम्मद साहब, कृष्ण भगवान और हमारे वक्त के सतगुरु स्वामी जी महाराज, महाराज सावन सिंह जी ये सारे पूर्ण पुरुष कुलमालिक थे अगर हम इनको परमात्मा कह दें तो हम कोई ऐब नहीं कर रहे होंगे, उन्हें भी इंसान का चोला धारण करना पड़ता है। वे हम इंसानों की खातिर टट्टी–पेशाब वाला चोला, बीमारियों

का खोल धारण करके संसार में आते हैं। आप गुरु गोबिंद सिंह जी का इतिहास पढ़कर देख लें। आप कहते हैंः

मैं हूँ परम पुरख का दासा देखन आयो जगत तमाशा

मेरा इस संसार में आने का दिल नहीं करता था क्योंकि मैं अभ्यास करके दो से एक रूप हो गया था। जब परमात्मा ने हुक्म दिया कि तू संसार में जाकर आत्माओं को मेरे साथ जोड़ तो मैं परमात्मा का हुक्म नहीं मोड़ सका। परमात्मा ने मुझसे जो कहा मैंने संसार में आकर वही किया बल्कि मैंने यहाँ तक कहाः

जो मो को परमेश्वर उचरे सब नर्क कुंड में पर हे

सन्त किसी को भी अपनी बड़ाई नहीं करने देते वे अपने गुरु की बड़ाई करते हैं। गुरु नानकदेव जी कहते हैंः

वड्डे दिया वड्डयाईयां कुछ कहना कहन न जाई

आप अपने गुरु की बड़ाई करते हैं। सन्त इस संसार को एक तमाशे की तरह देखते हैं। जिस तरह लाईन के ऊपर ट्रेन के डिब्बे दौड़ते जाते हैं कि दुनिया कहाँ से कहाँ दौड़ रही है, न दिन को चैन है न रात को चैन है।

स्वामी जी महाराज ने हमें हर किस्म की मिसालें देकर समझाया है हमारा भी फर्ज बनता है कि हम भजन–सिमरन करें। परमात्मा ने इंसान का जामा दिया है इसे लेखे में लगाएं।

***

बाबा जयमल सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

सिमरन

1. सिमरन करने से शरीर में ऊर्जा का संचार होता है।
2. सिमरन करने से मन हल्का हो जाता है।
3. सिमरन करने से नकारात्मक विचार नहीं आते।
4. सिमरन करने से मन–तन की पीड़ा शान्त होती है।
5. सिमरन करने से अंतर्मन से खुशी मिलती है।
6. सिमरन करने से सारे दुःख–दर्द दूर हो जाते हैं।
7. सिमरन करने से ताजगी का एहसास होता है।
8. सिमरन करने से बिगड़े काम भी बन जाते हैं।
9. सिमरन करने से समृद्धि आती है।
10. सिमरन करने से मोक्ष मुक्ति के द्वार खुल जाते हैं।

बाबा जयमल सिंह जी महाराज के मुखारविन्द से

अमृत वचन

जिस आदमी के पास स्वयं के लिए ढाई घंटे का समय नहीं है, वह आदमी व्यर्थ ही जी रहा है। वह आदमी जी नहीं रहा सिर्फ अपनी मौत का इंतजार कर रहा है। ढाई घंटे का सिमरन ही उसे मुकाम तक पहुँचाऐगा।

आखिर में जब हिसाब–किताब होता है तो हमने जो भी शरीर के बल पर कमाया है उसे मौत छीन लेती है लेकिन हमने जो भीतर कमाया है उसे मौत छीन नहीं पाती। उस समय आपके पास कुछ बचाने योग्य है? अगर नहीं है तो जल्दी से बचाना शुरु करें।

भीतर की कमाई करनी शुरु करें। किन साँसों का ऐतबार करूँ जो अन्त में मेरा साथ छोड़ जाएंगी? किस धन का अहंकार करूँ जो अन्त में मेरे प्राण नहीं बचा पाएगा? किस तन का अहंकार करूँ जो अन्त में मेरी आत्मा का बोझ भी नहीं उठा पाएगा?

भगवान की अदालत में वकालत नहीं होती अगर सजा हो जाए तो जमानत नहीं होती। भजन–सिमरन करना अपनी आत्मा का काम है। भजन–सिमरन सदा ही आपके साथ रहेगा क्योंकि यह सतगुरु की दात है। यह दात बढ़ेगी, कभी घटेगी नहीं। भजन–सिमरन पर ज्यादा से ज्यादा वक्त दें।

***

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

सवाल-जवाब

एक प्रेमी: *– मैं जब भजन–सिमरन करने के लिए बैठता हूँ तो मेरा ध्यान कभी दाँई तरफ, कभी बाँई तरफ तो कभी किसी और तरफ चला जाता है। क्या ऐसा होने देना चाहिए या मुझे अपने ध्यान को बीच में ही केन्द्रित करना चाहिए?*

बाबा जी: – हमने हमेशा अपने ध्यान को बीच में ही केन्द्रित करना है। मैंने आपको कई बार उदाहरण दिया है कि आर्मी में हमें राईफल चलाना सिखाया जाता था। हमसे कहा जाता था अगर हमारा शरीर, राईफल और निशाना एक ही दिशा में स्थिर नहीं होंगे तो हम सही निशाना नहीं लगा सकेंगे। इसी तरह जब हम भजन–सिमरन के लिए बैठते हैं अगर हमारा ध्यान दोनों आँखों के बीच केन्द्रित नहीं होगा तो हमारा ध्यान कभी दाँई तरफ, कभी बाँई तरफ चला जाएगा और हम अपने निशाने पर नहीं पहुँच पाएंगे।

गुरु ने हमें नामदान के समय जो निशान बताया है अगर हम उस निशान तक नहीं पहुँचते तो हम भजन का आनन्द नहीं ले सकते। जब हम अपने ध्यान को दोनों आँखों के बीच में केन्द्रित करेंगे तो हमारा मन धीरे–धीरे स्थिर हो जाएगा और हमें सिमरन का आनन्द आने लगेगा। हमें भजन पर इस तरह बैठना चाहिए कि हम लम्बे समय तक बिना हिले–डुले बैठ सकें।

एक प्रेमी: *– भजन में दर्द को कम करने का या उससे ऊपर उठने का क्या तरीका है?*

बाबा जी: – सिमरन।

एक प्रेमी: *– हम जिंदगी में कितनी चीजें खुद चुन सकते हैं, क्या सब कुछ पहले से ही तय है, नामलेवा और बिना नामलेवा में क्या फर्क है?*

बाबा जी: – सब कुछ पहले से ही तय होता है। सतसंगी पर जब कोई दुःख आता है तो उसे सारा दुःख नहीं भोगना पड़ता, उसके ऊपर सतगुरु का हाथ होता है, सतगुरु सदा ही उसकी रक्षा करता है। हम हमेशा ही अपने मन की बात सुनते हैं। जब कुछ अच्छा होता है तो हम कहते हैं, ''यह सब हमने किया है।'' जब कुछ अच्छा नहीं होता तो हम उसके लिए परमात्मा को जिम्मेदार ठहराते हैं और सब कुछ गुरु पर छोड़ देते हैं। हम मन के कहे अनुसार चलते हैं। जब हम अपनी आत्मा को मन के पिंजरे से आजाद कर लेते हैं तो हमें मन और आत्मा का फर्क समझ आ जाता है।

एक प्रेमी: *– जब मैं दोपहर के बाद सिमरन के लिए बैठता हूँ तो मुझे बहुत मुश्किल होती है?*

बाबा जी: – दुनिया के बारे में न सोचें, अपना ध्यान सिमरन की तरफ रखें आपको कोई मुश्किल नहीं आएगी।

एक प्रेमी: *– मुझे कभी–कभी ऐसा लगता है कि मैं बहुत स्वार्थी हूँ। जब मैं आगे बढ़ना चाहता हूँ तो दूसरे नामलेवा लोगों से अपनी तुलना करता हूँ। मैं सिर्फ अपनी चढ़ाई की तरफ ध्यान देना चाहता हूँ?*

बाबा जी: – जब हमारे अंदर मन की लहर पूरी शक्ति से उठती है तो हमें लगता है कि हम स्वार्थी हैं। सन्तमत में ऐसा महसूस नहीं करना चाहिए, आप महान नहीं हैं महान तो सिर्फ सतगुरु ही है।

एक प्रेमी: *– गुरु की पहली जिंदगी में जब वह सतगुरु नहीं बना था तो उसने अपनी जिंदगी में बहुत कष्ट और कर्म क्यों सहन किए होते हैं?*

बाबा जी: – आप नहीं जानते कि गुरु ने सतगुरु बनने से पहले दुःख क्यों सहन किए होते हैं? आज आप उसका जो रूप देख रहे हैं, उसमें

जो शक्ति काम कर रही है उसके बारे में आपको कुछ पता नहीं होता। आप उसके पिछले जन्मों के बारे में भी कुछ नहीं जानते।

महाराज सावन सिंह जी और महाराज कृपाल भी यही कहा करते थे, ''सभी गुरुओं की आत्माएं इस संसार में आने से पहले धुरधाम से ही तैयार होकर आती हैं। उन्होंने हमें दिखाना होता है कि भजन–सिमरन के बिना और दुःख सहन किए बिना हम कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकते इसलिए हम उन्हें दुःख सहते हुए और मेहनत करते हुए देखते हैं।''

एक प्रेमीः – *अमेरिका में ज्यादा लोग ईसाई हैं। वे लोग प्रार्थना सभा में जाकर जीसस के सामने प्रार्थना करते हैं और वे कई बार किसी पवित्र आत्मा का प्रभाव भी महसूस करते हैं। मुझे हैरानी है अगर ऐसी भावनाएं जीसस से नहीं आती तो कहाँ से आती हैं?*

बाबा जीः – ऐसी धारणा हर धर्म में होती है। भारत में भी बहुत से लोग गुरुद्वारों में जाकर अपने पिछले गुरुओं के आगे अरदास करते हैं और वे यह दावा भी करते हैं कि उन्होंने अपने अंदर गुरु की उपस्थिति महसूस की। मेरा अनुभव है कि जब हम पिछले गुरुओं को याद करते हैं तो मन को कुछ शान्ति जरूर मिलती है लेकिन हमें कोई गुरु नहीं मिलता जो हमारी आत्मा की जिम्मेवारी ले। किसी भी धार्मिक स्थान पर जाने से हमारी आत्मा चढ़ाई नहीं करती इसलिए बहुत कम समय में ही हमारा विश्वास उस धर्म से डगमगा जाता है।

जब लोग चर्च में जाकर प्रार्थना करते हैं तो वे लोग अच्छा काम कर रहे होते हैं उनकी प्रार्थना भक्ति में गिनी जाएगी लेकिन ऐसी जगह पर जाने से ऐसा कुछ नहीं होता जो मौत के समय हमारी मदद कर सके।

मेरा जन्म सिक्ख धर्म में हुआ, मेरे माता–पिता बहुत श्रद्धालु थे। वे बहुत लगन से गुरु ग्रन्थ साहब पढ़ते और गुरुद्वारे में जाकर अरदास भी करते थे। वे सिक्ख धर्म के अनुसार सभी काम विधि–विधान से करते

और चाहते थे कि मैं भी उसमें विश्वास करूँ। मैं गुरु ग्रन्थ साहब में विश्वास करता था लेकिन मुझे गुरु ग्रन्थ साहब में से इशारा मिला कि एक जीवित पूर्ण गुरु की जरूरत है। मैं गुरु की खोज में लग गया।

मेरे पिता मुझसे कहते, ''गुरु नानकदेव जी एक पवित्र आत्मा थे, वही सब कुछ करेंगे।'' मैं अपने पिता से पूछता कि क्या आपने कभी गुरु नानकदेव जी को देखा है? जब आपने उन्हें देखा ही नहीं तो आप उनके बारे में क्या कह सकते हैं फिर उनके पास कोई जवाब नहीं था।

मैं भक्ति करने लगा, पूर्ण गुरु को ढूंढ रहा था और मुझे मेरा गुरु मिल गया। मेरे पिता जी को यकीन नहीं आया, वह कहते, ''मैं समय आने पर तुम्हारी भक्ति देखूँगा।'' जब मेरे पिता का आखिरी समय आया तो उनके धार्मिक विश्वास से उन्हें कोई मदद नहीं मिली। उस समय मेरे पिता ने महाराज सावन सिंह जी और महाराज कृपाल सिंह जी की उपस्थिति महसूस की। दोनों महान गुरु उनकी आत्मा की संभाल करने के लिए आए। उस समय मेरे पिता जी ने मुझसे बहुत प्यार किया और कहा, ''अब मुझे अहसास हो गया है कि तुम्हारी भक्ति ही सच्ची भक्ति है।''

गुरु नानकदेव जी ने इस तरह की अरदास और रीति–रिवाज के बारे में लिखा है कि जो लोग बिना देखे ही पिछले गुरुओं की भक्ति कर रहे हैं उनकी हालत उस औरत जैसी है जिसका पति उसे छोड़कर परदेस गया हुआ है और वह औरत हार–श्रंगार करके दुल्हन की तरह सजती है तो लोग उस पर शक करते हैं कि ये औरत पतिव्रता नहीं है।

इसमें कोई शक नहीं कि ऐसे लोग अच्छा काम कर रहे हैं लेकिन ऐसी भक्ति करने से कोई फायदा नहीं। जब आपने गुरु को देखा ही नहीं, गुरु ने आपकी आत्मा को संभालने का कोई वायदा नहीं किया तो उसकी भक्ति करने से आपको क्या फायदा होगा?

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''अगर आप किसी दुकान पर जाएं वहाँ दुकानदार ही न हो चाहे आपके पास दुकानदार की तस्वीर हो और आप उस तस्वीर से प्रार्थना करें कि मुझे यह चीज चाहिए वह तस्वीर आपको सामान नहीं देगी। आप ऐसी दुकान पर जाएं जहाँ जीता–जागता दुकानदार बैठा हो तो उससे आपको जरूरत का सामान मिल जाएगा।''

एक प्रेमी: *– सेवक भजनों के अंदर अपने गुरु के आगे ऐसे इशारे और प्रार्थनाएं करता है कि गुरु उसे बिसार न दे, छोड़ न जाए इस सबका क्या मतलब है?*

बाबा जी: – सबसे पहले उस करण–कारण परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है जिन्होंने हमें अपनी याद में बैठने का मौका दिया है। गुरु नानकदेव जी कहते हैं:

कीता लोड़िए कम सो हर पै राखिए

आपने जब भी कोई नया काम शुरु करना हो तब आप अपने गुरुदेव, अपने ईष्ट के आगे सिर झुकाकर प्रार्थना करें ताकि वह अपनी दया–दृष्टि से आपके कार्य को रसभरा बनाए।

सन्त–सतगुरु अपने भजनों में जो नम्रता और प्रार्थना करते हैं वह उनके हृदय से आती है। वे नाम के रंग में रंगे होते हैं, वे शब्द की धारा से ही आते हैं। उन्होंने अंदर जाकर देखा होता है कि हमारा गुरु शब्द–रूप है, वह बाहर तो केवल एक बहरूपिए की तरह हमारे बीच आकर रहता है।

हम दुनिया में मिसालें भी देखते हैं अगर कोई बड़ा अफसर है और उसके हाथ में पूरा अधिकर है तो हम उसके आगे जाकर प्रार्थना करते हैं, ''आप हमारे हक में फैसला करें।'' जबकि उसे सरकार की तरफ से न्याय करने की हिदायत होती है फिर भी हम अपनी फरियाद करते रहते हैं। कई बार हमने कितने भी अपराध क्यों न किए हों दुनियावी इंसान भी हम पर दया कर देता है।

गुरु नानकदेव जी कहते हैं कि हम परमात्मा की बराबरी नहीं कर सकते, उसके आगे प्रार्थना ही कारगर होती है। आप भजनों में सुनते हैंः

तेरे जेहा मैंनू इक वी नी मिलना, मेरे जहियाँ तैनूं लक्खी प्यारेया
तिल तिल दा अपराधी तेरा, रत्ती रत्ती दा मैं चोर प्यारेया

दयालु गुरु बिना किसी मुआवजे के शिष्य की सेवा करता है। सतगुरु जब आता है संगत बना लेता है। महाराज सावन सिंह जी इस बात को एक खास कहानी के जरिए समझाया करते थेः पिरान कलियर का वाक्या है कि साईं भीख का एक सेवक नाम के रंग में रंगा हुआ था। वह दिल्ली के बाजारों में मस्ती में झूमता हुआ कह रहा था, ''याह भीख, याह भीख, जले भीख, थले भीख।''

उन दिनों न्याय काजियों के हाथ में था, काजियों ने उसे पकड़कर कहा, ''तू क्या कुफ्र बोल रहा है? तू याह अल्लाह, याह रसूल बोल।'' वह सेवक मस्त था क्योंकि उसने अंदर अपने मुर्शिद को देख लिया था कि मेरा मुर्शिद कुलमालिक है, मैं किसके आगे गीत गाऊँ और किसके आगे प्रार्थना करूँ।

काजी उस सेवक को पकड़कर शहन्शाह अकबर के दरबार में ले गए। अकबर मुगल खानदान में एक अच्छा न्यायकारी बादशाह हुआ है। सेवक पर नाम का रंग चढ़ा हुआ था, वह दरबार में जाकर भी याह भीख, याह भीख ही बोल रहा था। अकबर ने उससे कहा, ''बारिश नहीं हो रही, अकाल पड़ा हुआ है। क्या तू भीख से कहकर बारिश करवा सकता है?'' सेवक ने कहा, ''मुझे इजाजत दें, मैं अपने मुर्शिद से पूछ लेता हूँ।''

वह सेवक अभ्यास में बैठ गया, उसकी अरदास कबूल हुई। सेवक ने कहा कि तीसरे दिन बारिश होगी। काजियों ने कहा कि इसे पकड़कर रखा जाए अगर भाग गया तो फिर हाथ नहीं आएगा। अकबर ने कहा, ''इसे आजाद कर दिया जाए।'' वायदे के मुताबिक तीसरे दिन बहुत बारिश हुई।

सेवक को बताया गया कि बारिश हो गई है तो उसने कहा, ''भीख ने बारिश करवा दी।'' जब भी कोई बात होती तो वह भीख का ही नाम लेता।

अकबर बादशाह ने खुश होकर उस सेवक को इक्कीस गाँवों का पट्टा लिखकर दे दिया। सेवक ने कहा, ''यह नाशवान चीज है, मैं नाशवान चीज नहीं लेता।'' सेवक ने वह पट्टा अपने मुर्शिद के पास भिजवा दिया। जब उसका मिलाप अपने मुर्शिद से हुआ, तब मुर्शिद ने कहा, ''प्यारेया, जिस समय तूने फरियाद की उस समय तेरा ख्याल मुझमें था और मेरा ख्याल दरगाह में था। तूने माँगा भी तो क्या माँगा? अगर उस समय तू यह कहता कि मुझे अल्लाह–वलि बना दें, उस समय तेरा सब कुछ ही मंजूर था।''

प्यारेयो, जब हम सच्चे दिल से प्रार्थना करते हैं उस समय हमारे गले में जो आवाज होती है अगर वही आवाज हमारे दिल में हो तो हमारा समरथ सतगुरु भीख की तरह जरूर सुनता है। शिष्य जब अपनी कमजोरियों की तरफ निगाह मारता है तो उसे पता लगता कि मुझमें कितनी कमजोरियाँ हैं अगर गुरु ने मेरा लेखा लिया तो हो सकता है कि मुझे लम्बी और कड़ी सजा भोगनी पड़ेगी इसलिए शिष्य प्रार्थना करता है, ''हे सतगुरु, तू लेखा लेने से पहले ही मुझे बख्श दे।'' कबीर साहब प्रार्थना करते हुए कहते हैंः

बाप राम सुन बेनती मेरी, तुम स्यों प्रगट लोगन स्यों चोरी
पहले काम मुग्ध मत किया, तां पे डरपे मेरा जिया
राम राय सुन बेनती लीजे, पहले बख्श फिरे लेखा लीजे
कहे कबीर बाप राम राया, अब मैं शरण तुम्हारी आया

सन्तों ने नम्रता और प्रार्थनाओं भरे भजन लिखे हैं। हमारा भूला हुआ मन बहुत मजबूत होकर काल का एजेन्ट बनकर हमारे अंदर बैठा हुआ है। यह सेवक को अपनी गलती मानने ही नहीं देता अगर सेवक अपनी गलती मान ले तो कोई रूकावट ही नहीं, मसला तो गलती मानने का है। भजनों में अपनी गलतियाँ, कमजोरियाँ मानना, गुरु के प्रति अपनी श्रद्धा, प्यार और विश्वास को जतलाना ही है।

सन्त जब तक संसार में रहते हैं वे सदा अपने आपको छोटा बनकर दिखाते हैं। बेशक सेवक उनके मुँह पर कितना भी कहे कि आपने एक्सीडेंट के समय हमारी मदद की, बीमारी में ऑपरेशन के समय हमारी मदद की। आमतौर पर ऐसे वाक्यात गुरु और शिष्य के बीच होते रहते हैं। गुरु में इतनी नम्रता होती है कि वह कई बार कहता है, ''मैं तो आपकी तरह ही एक पापी जीव हूँ, यह सारी दया मेरे गुरु महाराज की है।''

सभी सन्तों ने कहा है कि आत्मा ने जिस रास्ते से जाना है वह रास्ता बाल के दसवें हिस्से जितना संकरा है। वहाँ अहंकार, मैं–मेरी साथ नहीं चल सकते। कबीर साहब कहते हैं, ''चाहे आप हाथी को डराएं, धमकाएं या अंकुश मारें वह बारीक रास्ते से जा ही नहीं सकता लेकिन चींटी को धमकाने की जरूरत नहीं वह बहुत आसानी से उस रास्ते पर चल पड़ती है।'' कबीर साहब कहते हैंः

छोटा रहे चित्त में अंतर शब्द माहे तब सुरत गहे

प्यारयो, अगर हम सदा ही प्रार्थना करेंगे तो परमात्मा कृपाल हम पर रहम करेंगे। गुरु को सेवक की जरुरत नहीं होती, सेवक को गुरु की जरुरत होती है। वह तो हमसे भी ज्यादा फरियादें अपने गुरु के आगे करने में लगा होता है। सच्चाई तो यह है कि सन्त जब नाम देते हैं उस समय आत्मा को अपने गुरु की गोद में डालकर कहते हैं, ''तू इसे बख्श दे।''

मैं सदा ही बताता हूँ कि राजस्थान 16 पी.एस. में बहुत से प्रेमियों को उस गुफा के दर्शनों का मौका मिलता है जहाँ पर परमात्मा कृपाल ने मेरे ऊपर खास बख्शीश की थी। आपने पहले दिन मेरी आँखों पर हाथ रखकर कहा, ''इन्हें अंदर की तरफ खोलना है, मैं खुद ही तेरे पास आऊंगा।'' उस समय मैंने प्यार के आँसू बहाते हुए कहा, ''काल मेरे पीछे लगा हुआ है, तूने मेरी लाज रखनी है, मेरा पर्दा ढकना है।''

***

RNI No - RAJHIN/2003/9899

जो आया है उसने जाना है। दुनिया की यह हालत है कि यह सदा बदलती रहती है। यहाँ हर धातु-सोना, लोहा और सब बदलता रहता है, यहाँ कोई भी चीज़ स्थिर नहीं। हमें पता नहीं कि मौत ने किस वक्त किस जगह किस बहाने गला दबा लेना है, हमारी प्लेनिंग बीच में ही धरी-धराई रह जाती है।